यीशु मसीह के सेवक

फ्रैंकलिन के नोट्स

2 कुरिन्थियों 5:17-21 में पौलुस कुरिन्थ नगर के विश्वासियों को लिखता है। इसलिए ये पद प्रत्येक नया जन्म प्राप्त विश्वासी पर लागू होता है।

इसलिये यदि **कोई** मसीह में है तो वह नई सृष्टि (नया जन्म प्राप्त) है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं। 18 ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ **हमारा मेलमिलाप** कर लिया (हमें सही सम्बन्ध में पुनः स्थापित कर दिया), और **मेलमिलाप की सेवा** हमें सौंप दी (प्रत्येक नया जन्म पाए हुए विश्वासी के लिए) है।

- **क्या आप** सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर के **सेवक** हैं?
- आपका सेवा-कार्य क्या है???

19 अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर **अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उस ने मेल-मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।**

- क्या ऐसा हो सकता है? **संसार का मेल-मिलाप** ?? हाँ, यह सच है।
- यह सुसमाचार है, सब लोगों के लिए शुभ सन्देश।
- यह कैसे हो सकता है ???

21 जो **पाप से अज्ञात** था, **उसी को** उसने हमारे लिये पाप ठहराया **कि** हम **उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।**

- यह महान अनुग्रह है!
- उसने हमारे पापों को ले लिया — उसके लहू ने पापों का मूल्य चुका दिया -> मृत्यु रोमियों 6:23 और पापों को क्षमा कर दिया -> हमें अपनी धार्मिकता दे दी।
- **परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ** (यदि हम विश्वास करें)।
- क्योंकि यह सच है ... प्रभु परमेश्वर किसी को नरक में नहीं डालता! लोग अपने आपको नरक में डालते हैं जब वे यह कहते हैं "धन्यवाद, मैं इसे नहीं मानता।"

20 इसलिये, **हम** मसीह के **राजदूत** हैं; मानो परमेश्वर **हमारे द्वारा** विनती कर रहा है। हम मसीह की ओर **से निवेदन करते** हैं (लोगों को बताएँ और विनती करें) कि **परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो।**

- एक राजदूत वह होता है जिसे कोई देश अधिकार सहित किसी अन्य देश में भेजता है कि वह उसका प्रतिनिधित्व करे, उसकी ओर से बोले और कार्य करे। हमारी नागरिकता स्वर्ग की है। फिलिप्पियों 3:20 आप परमेश्वर के राज्य के हैं।

- हम पौलुस के समान हैं :
  इफिसियों 6:19-20 मेरे लिए भी प्रार्थना करो कि **बोलते समय** मुझे ऐसा प्रबल वचन (पवित्र आत्मा के द्वारा) दिया जाए कि मैं **साहस** से **सुसमाचार के रहस्य को** प्रकट कर सकूं, जिसके लिए **मैं** ज़ंजीर से जकड़ा हुआ (जंजीर के लिए 2 कुरि 5:14 देखें) **राजदूत हूँ**। प्रार्थना करो कि जैसा मुझे बोलना चाहिए, **मैं साहस से बोल सकूं।**

वह कौन था जिसे सबसे पहले सुसमाचार के राजदूत और सेवक के रूप में सेवा करने की जिम्मेवारी दी गई थी?

> गलातियों 3:8-9 पवित्रशास्त्र ने पहले ही से यह जानकर कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास से धर्मी ठहराएगा, पहले ही से **अब्राहम** को यह सुसमाचार सुना दिया कि "तुझ में **सब जातियाँ** आशीष पाएँगी।

अब्राहम और अब्राहम का वंश, परमेश्वर द्वारा चुने गए और बुलाए गए **सेवक** और **राजदूत** थे ताकि वे **सब जातियों** को सुसमाचार की आशीषों के बारे में बताएँ।

यीशु के आने से बहुत पहले ही अब्राहम के वंशज यह मानने लगे थे कि **केवल वे ही** परमेश्वर के **चुने हुए लोग** हैं, सब जातियाँ नहीं।

इसलिए जब यीशु आया तो वह उन लोगों से बहुत क्रोधित हुआ जिन्होंने अन्य जातियों के लिए परमेश्वर का सेवक तथा राजदूत होने से इनकार कर दिया था। मत्ती 21:33-43

"एक **गृहस्वामी** (सर्वशक्तिमान परमेश्वर) था, जिसने दाख की बारी लगाई, उसके चारों ओर बाड़ा बाँधा, उसमें रस का कुंड खोदा और गुम्मट बनाया , **और किसानों को उसका ठेका देकर** परदेश चला गया। 34 जब फल का समय निकट आया, तो उसने अपने **दासों** को (भविष्यवक्ताओं) उसका **फल लेने के लिये** किसानों के पास भेजा। 35 पर किसानों ने उसके दासों को पकड़ के, **किसी को पीटा, और किसी को मार डाला,** और **किसी पर पथराव किया।** 36 फिर **उसने** पहलों से अधिक और **दासों को भेजा**, और **उन्होंने उनसे भी वैसा ही किया।** 37अन्त में उसने **अपने पुत्र को** उनके पास यह सोच कर **भेजा** कि वे मेरे पुत्र **का आदर करेंगे।** 38 **परन्तु किसानों ने पुत्र को देखकर आपस में कहा, 'यह तो वारिस है, आओ, इसे मार डालें और इसकी मीरास ले लें।'** 39 अत: उन्होंने उसे पकड़ा **और दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला।** 40 इसलिये **जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?"** 41 **उन्होंने उससे कहा,** "वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नष्ट करेगा; और **दाख की बारी का ठेका दूसरे किसानों को**

देगा, जो समय पर **उसे फल दिया करेंगे।**" 43 इसलिये मैं तुम से कहता हूँ कि **परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।**

मत्ती 23:37-38 हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन पर पथराव करता है। कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूँ, परन्तु तुमने न चाहा। 38 देखो, **तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है।**

और यही तो यीशु ने वास्तव में किया। उसने इस्राएल से सुसमाचार को ले लिया और उसे अपनी कलीसिया अर्थात उसके बुलाए हुओं को सौंप दिया ... जो हम हैं

इस पर विचार करें : अब्राहम से लेकर यीशु मसीह के इस पृथ्वी पर आगमन का समय लगभग 2,000 वर्षों का था। तो अब कौन सा वर्ष है??? और हमने भी उस आज्ञा को अभी तक पूरा नहीं किया जो हमें दी गई थी।

यीशु अब कहाँ है?? वह अपने पिता के दाहिने हाथ बैठा है।
वह क्या कर रहा है???

- वह हमारी मध्यस्थता कर रहा है और हमारे लिए जगह तैयार कर रहा है।
- वह और क्या कर रहा है???
- इसका उत्तर :

Hebrews 10:12-13 परन्तु यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान **सर्वदा के लिये** चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा, और उसी समय से इसकी **बाट जोह** रहा है, कि उसके बैरी उसके पाँवों के नीचे की पीढ़ी बनें।

वह किसकी बाट जोह रहा है???? उत्तर : आपकी और मेरी।

मैं कहूँगा कि नया जन्म पाए हुए विश्वासियों में से लगभग 90 प्रतिशत लोग यह नहीं जानते कि वे सेवक हैं। और यही कारण है कि हम अभी तक अपने मिशन को पूरा नहीं कर पाए।

मत्ती 24:14 राज्य का यह सुसमाचार **सारे जगत** में प्रचार किया जाएगा , कि **सब जातियों** पर गवाही हो, **तब अन्त आ जाएगा।**

वह आपकी और मेरी बाट जोह रहा है!

हम इस विषय में क्या कर रहे हैं???

आप जिस भी स्थान पर हैं आपको वहीं यीशु के सेवक बनना चाहिए।

घर पर/ अपने कार्यस्थल पर/ स्कूल में/ दुकान में/ हर जगह ...

मेल-मिलाप की सेवा के रूप में

आपकी सेवकाई वहीं से आरम्भ होती है जहाँ आप हैं।

जहाँ आप काम करते और रहते हैं वहीं आपकी सेवा का स्थान होता है।

लोगों को बताओ कि परमेश्वर यीशु मसीह की क्रूस पर हुई मृत्यु के द्वारा **अपने साथ जगत का मेल-मिलाप कर रहा है**। यीशु ने लोगों के पापों को अपने ऊपर ले लिया और **लोगों के अपराधों को क्षमा कर दिया। इसलिए कि वह उनसे बहुत प्रेम करता है और वे उसके लिए बहुत ख़ास और मूल्यवान हैं।**

मसीह का राजदूत होने के नाते, उन्हें बताएं और उनसे विनती करें कि वे परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में बहाल किए जाएं।

लूका 16:10 जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है

लूका 19:17 क्योंकि तू बहुत ही थोड़े में विश्वासयोग्य निकला अब तुझे और भी दिया जाएगा।

इफिसियों 4:11-12 उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया (किस लिए), जिस से **पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए**

- प्रत्येक विश्वासी को उसकी सेवा के लिए तैयार करना।

और मसीह की देह उन्नति पाए, 13 जब तक कि **हम सब** के सब **विश्वास** और परमेश्वर के पुत्र की **पहिचान** में **एक** न हो जाएँ, और एक **सिद्ध मनुष्य** न बन जाएँ और **मसीह के पूरे डील-डौल** तक न बढ़ जाएँ। 14ताकि हम आगे को **बालक न रहें** जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर-उधर घुमाए जाते हों। 15 वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में **बढ़ते जाएँ**, 16 जिससे सारी देह, **हर एक जोड़** की सहायता से **एक साथ मिलकर** और **एक साथ गठकर,** उस प्रभाव के अनुसार जो **हर एक अंग के ठीक-ठीक कार्य करने के द्वारा** उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में **उन्नति करती जाए।**

- मुझे नहीं लगता कि यह अधिकतर प्रेरितों, भविष्यवक्ताओं, सुसमाचार प्रचारकों, पास्टर और शिक्षकों के कार्यों का केंद्र रहा है जो कि परमेश्वर की दृष्टि में बहुत महत्वपूर्ण और प्राथमिक कार्य है।

अपनी सेवा, अपने उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए आपको यह सच्चाई जाननी चाहिए और इसे जीना चाहिए।

पास्टर और शिक्षकों को यह सच्चाई जाननी चाहिए और इसे अपनी भेड़ों को बतानी चाहिए।

हम इस लक्ष्य को प्राप्त क्यों नहीं कर पा रहे हैं? समस्या क्या है?

#1 98% विश्वासियों को नहीं पता कि वे सेवक हैं!

#2 पास्टर और शिक्षक इस सच्चाई की और अन्य कई बातों की शिक्षा नहीं देते।

#3 साथ ही, सेवा सम्बन्धित ईर्ष्या और पद का घमंड भी होता है। गिनती11:25-29

याकूब 3:1 हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो कि **हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे।**

अधिकतर मसीह की देह / कलीसिया/ को यह नहीं सिखाया जाता कि वे सेवक हैं। वे कलीसिया जाते हैं / सन्देश को सुनते हैं और सोचते हैं कि उन्होंने उस सप्ताह का अपना धार्मिक कर्तव्य पूरा कर लिया है।

98% विश्वासी सोचते हैं : पास्टर ही सेवक है और उसे ही "सेवा का कार्य" करना है।

इसका परिणाम यह होता है कि सब सेवक नहीं बनते :

- होशे 4:6 मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नष्ट हो गई।
- यशायाह 5:13 इसलिये अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बँधुआई में जाती है

इसके विपरीत :

दानिय्येल 11:32 ....परन्तु जो लोग अपने परमेश्वर का **ज्ञान** रखेंगे, वे हियाव बाँधकर बड़े काम करेंगे। यह जानते हुए कि वे सेवक हैं / उन्होंने पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाया है / उनका पवित्र आत्मा से अभिषेक हुआ है / वे अपना क्रूस उठाकर यीशु के पीछे-पीछे चलेंगे / मृत्यु तक अपने प्राण को प्रिय न जानते / वे सुसमाचार का प्रचार करेंगे / बंदियों को स्वतंत्र करेंगे / अंधों को दृष्टिदान देंगे / बीमारों को चंगा करेंगे / और मृतकों को जीवित करेंगे / वे परमेश्वर के राज्य की घोषणा और उसे प्रकट करते हैं।

हमारा काम हमारे सामने है ...

हमें चाहिए कि सब लोगों को शिक्षा दें / उन्हें तैयार और सशक्त करें। हमारे पास यह अवसर है कि हम उनसे बात करें / उन्हें प्रोत्साहित करें और उनके लिए यह सम्भव करें कि वे दूसरों को भी सिखा सकें / उन्हें शिष्य / सेवक बनाएं। और यह काम जितना अधिक हो सके, और जितना जल्दी हो सके हम करें।

उन्हें अपने हाथों में — अपनी भाषा में सीखने के नोट्स चाहिए — ताकि वे उनका अध्ययन कर सकें और फिर उनसे सिखा भी सकें। उदाहरण : प्रवीन सिंह